thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
दूरभाष : 01262-216222
सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 10 रोहतक, 7 अगस्त, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

मूर्तिपूजा और तीर्थयात्राओं का पुरजोर प्रचार

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

प्राय: लोगों की मान्यता है कि यह मूर्तिपूजा और तीर्थ सनातन से चले आते हैं। सनातन का अर्थ लोग सबसे पुराना, जो सदा से चला आ रहा है, मानते हैं। परन्तु यह नहीं जानते कि सबसे पुराना जो चला आ रहा है, वह तो वैदिक धर्म है, अर्थात् वेदोक्त धर्म, वेद आधारित धर्म। सृष्टि के आदि से चला आ रहा है। ईश्वर ने 4 महर्षियों—अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को वेदज्ञान सृष्टि के आरम्भ में दिया। यह लोगों में मूर्तिपूजा से अपनी रोटी-रोजी चलाने वाले पाखण्डी पण्डे-पुजारियों ने कह दिया कि मूर्तिपूजा और तीर्थ सनातन हैं। जब मूर्तिपूजा और तीर्थ सनातन हैं, तो सनातन धर्म क्या है? सनातन धर्म का अर्थ हुआ सबसे पुराना धर्म, परन्तु वेद में तो कहीं मूर्तिपूजा का वर्णन है ही नहीं, फिर मूर्तिपूजा सनातन कैसे हुई? सनातन तो वैदिक धर्म है, जो सबसे पुराना है। लोग जो मूर्तिपूजा करते हैं, उनको यह भी मालूम नहीं कि मूर्तिपूजा कब से आरम्भ हुई।

मूर्तिपूजा कहाँ से चली? जैनियों से। जैनी लोग कहते हैं कि शान्त ध्यानावस्थित बैठी हुई मूर्ति देख के अपने जीव का भी शुभ परिणाम वैसा ही होता है। इसके उत्तर में महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के 11वें समुल्लास में लिखते हैं। जीव चेतन और मूर्ति जड़, क्या मूर्ति के समान जीव भी जड़ हो जाएगा? मूर्तिपूजा केवल पाखण्ड मत है। ईश्वर निराकार है उसकी मूर्ति कैसे बन सकती है? वेद में आया है—**'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** अर्थात् उस परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है, उसका कोई माप-तोल नहीं है, उसके कोई तुल्य नहीं है। यजुर्वेद (40,8) में लिखा है—ईश्वर सर्वव्यापक है ऐसा एक कण भी नहीं जिसमें ईश्वर की व्यापकता नहीं है। लोग मूर्ति के सम्बन्ध में प्राय: क्या तर्क देते हैं? परमेश्वर निराकार है वह ध्यान में नहीं आ सकता, इसलिए अवश्य मूर्ति होनी चाहिये, इससे हाथ जोड़ परमेश्वर का ध्यान करने में क्या हानि है? हानि है। जब परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती, तो मूर्ति है किस की, जिसकी आप पूजा कर रहे हो। ये सब मनघड़न्त काल्पनिक मूर्तियाँ हैं और देश-विदेशों में मूर्तियों का व्यापार बड़ी प्रबलता के साथ चल रहा है। जिस देश में भगवान् बिकता हो, भगवान् की मूर्ति को चोर चुरा ले जाते हों, भगवान् को ताले लगाकर रखा जाता हो, जो भगवान् बीमार पड़ जाता हो, उस देश की जनता का क्या हाल होगा? ईश्वर ने मानव को सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया है, उसको अच्छा-बुरा, ठीक-गलत, सत्य-असत्य, लाभ-हानि आदि पर विचार करने के लिये अति बुद्धि दी है, ताकि मनुष्य उससे कार्य सोच-विचार कर ही करे और सद्ग्रन्थों के अध्ययन से निरन्तर उसका विकास करे, परन्तु आज बुद्धि का विकास करने वाले कम और विनाश करने वाले अधिक प्रतीत होते हैं। जब मनुष्य अपनी बुद्धि से जड़ और चेतन के अन्तर को नहीं जान पाता तो वह बुद्धि से काम कहां ले रहा है। मूर्ति का बनाने वाला मानव, जो भगवान् को मूर्ति का रूप दे रहा है। क्या जो मूर्ति बनाने वाले हैं, उनमें से किसी ने या उनके पूर्वजों ने गणेश जी को देखा था। गणेश जी के धड़ पर हाथी का सिर और सूंड दिखाते हैं। जरा बुद्धि से विचार तो करो कि क्या यह संभव है? संभव नहीं है, अगर सम्भव होता तो कोई मनुष्य के धड़ के ऊपर कुत्ते का सिर लगा देता तो वह क्या करता? घर वालों को ही काटता और पड़ोसियों का भी जीना मुश्किल हो जाता।

कितने आश्चर्य की बात है कि लोग जरा भी अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करते। नेता मन्दिर, गुरुद्वारा, पीर, गिरजाघर आदि सब में पूजा करते व मत्था टेकते हैं। किसलिए कि उनका अपना स्वार्थ है, कोई भक्तिभाव से पूजा, मत्था नहीं टेकते, उनको सबको खुश करके वोट लेना है। चाहे टोपी पहननी पड़े, सिर को ढकना पड़े, तिलक लगाना पड़े, मोमबत्ती जलानी पड़े, सब कुछ करने को तैयार होते हैं और लोग बड़े प्रसन्न होते हैं कि नेता जी हमारे गुरुद्वारे आये, पीर पर चादर चढ़ाने आये, मन्दिर में आरती उतारने आये, चर्च में कैंडल जलाने आये। सब कुछ किया परन्तु स्कैण्डल नहीं छोड़ पाये, वे जिस पर जहाँ मौका लगा, कर ही दिया। बहुत कम लोग रह गए कि जो परमात्मा से डरते हैं और डरते वह हैं जो परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को जानते हैं। अपनी आत्मा में विराजमान परमात्मा की आवाज को सुनते हैं, परन्तु इनमें से भी बहुत से पाखण्डी हैं, जैसे कहावत है कि **'राम-राम जपना, पराया माल अपना'**। जो जड़ मूर्तिपूजा में लगे हैं वे तो सोचने-विचारने की शक्ति ही खो बैठे हैं। महर्षि दयानन्द ने बड़ी कठोर व सत्य बात कही कि जड़ की पूजा करने वालों की बुद्धि भी जड़ हो जाती है। उन्हें कोई लाख समझाए कि यह मूर्ति जड़ है, यह अपनी स्वयं की रक्षा भी नहीं कर सकती किसी दूसरे की रक्षा कैसे कर सकती है। यह भगवान् कैसे हो सकती है? ईश्वर तो सारे ब्रह्माण्ड का संचालन कर रहा है, सबका रक्षक, सबका पालनहार है। सबको उनके पाप-पुण्य कर्मों का यथावत फल देता है। मूर्ति कुछ नहीं कर सकती क्योंकि वह जड़ है। जहाँ रखी है, वहीं पर रखी रहेगी, अपनी धूली भी नहीं झाड़ सकती। पढ़े-लिखे अपने आपको कहलाने वाले सबसे ज्यादा पाखण्ड के शिकार हैं, क्यों शिकार हैं? क्योंकि उनको अक्षरी ज्ञान है, ज्ञान का कोई साहित्य पढ़ा ही नहीं, जिससे आत्मज्ञान हो। शैक्षणिक योग्यता और आध्यात्मिक योग्यता में जमीन आसमान का अन्तर है।

पाखण्डियों ने देश के अथाह धन को लोगों को पाखण्ड में फँसाकर विदेशियों के हाथ लुटवा दिया, कितना दुर्भाग्य इस देश के लोगों का है कि जो इन पाखण्डियों के चंगुल में फँसते ही जा रहे हैं। क्यों लुट रहे हैं, इन लुटेरे पाखण्डी बाबों के चंगुल में फँसकर? क्यों लालच के वशीभूत होकर अपने धर्म ईमान को भी बेच रहे हैं। क्यों नहीं, जो घटनाएं घट रही हैं, उनसे कोई शिक्षा ले रहा है। हजारों मन्दिरों को तोड़ा गया, वहाँ पर जो भी सोना, चांदी, हीरे-जवाहरात, धन, रुपया सब कुछ ऊँटों पर लादकर ले गए, उन्होंने मन्दिरों को तोड़कर, मस्जिदें बना दी। कत्लेआम किया, स्त्रियों की इज्जत लूटी, पण्डों को बन्दी बनाया। कब समझेंगे इस देश के लोग या इन पण्डे-पुजारियों के चक्कर में फिर देश को विदेशियों के हवाले कर दोगे। देश के नेता भी इनके भ्रमजाल में ऐसे

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ० सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित 'यजुर्वेद सन्देश' पुस्तिका से उद्धृत किया है। डॉ० साहब आर्यजगत् के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् हैं। सभी आर्यजन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ० साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्वर्गीय पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधान जी) की पुण्यतिथि में 'आदर्श आर्यप्रवर' शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ० साहब ने ही किया था, जिसकी सभी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उद्घाटन के समय सोमदेव जी मेरे गांव देवराला (हरयाणा) भी गये थे। मेरे पूरे परिवार से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी इन्होंने कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक 'यजुर्वेद संदेश' को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता का परिचय मिल जाता है। इस पुस्तक के पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेदभाष्य, अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक और सही है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्मकाण्ड को ही मानते थे। परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्मकाण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव मात्र का बड़ा उपकार व कल्याण किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो लेख लिखा है, इसे पढ़कर मैं आशा करता हूँ कि सुधी पाठक गण वेदों के सही स्वरूप को समझ पायेंगे। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इसी भाँति हैं—

1. मध्यकालीन वेद-भाष्यकार— मध्यकाल में अनेक वेद-भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत् 687 में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4-5 सूक्तों का अधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेदभाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही 'उद्गीथ' हुए हैं, उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवें सूक्त के चौथे मन्त्र से 86 सूक्त के 6 मन्त्र तक वेदभाष्य किया। यह भाष्य भी कर्मकाण्ड परक ही है। विक्रम संवत् की 12वीं शताब्दी में बेंकट माधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के 164 सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् 1255-1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् 1372-1442) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत् 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् 1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य यज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गोमेध, अश्वमेधादि शब्दादि का अनर्थ करके पशु हिंसा जैसा जघन्य कृत्य को यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने विक्रम संवत् 1100 में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 के लगभग किया। कर्म-काण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं अध्यात्म परक अर्थ भी किये। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्धृत किये। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया। अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशु हिंसा, मांस-भक्षण, जादू-टोना, मारण-उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही हैं, जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं। इसी प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिये ही उपयोगी हैं। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रुचि हट गई। वेकथा, वेदप्रवचन प्रचारादि के स्थान पर भागवत-गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गये।

पाश्चात्य विद्वान्— आधुनिक युग (18वीं-19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डॉ० एच.एच. विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। प्रो० मैक्समूलर ने रुद्र, मारुत्, वायु आदि देवताओं के सूक्तों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादन का भी परिश्रम साध्य कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान् ग्रासमान ने सन् 1876-1877 में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान् ए. लुडिविग, एच. ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर.टी.एच. ग्रिफिथ ने (सन् 1881-1898) चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। लांगल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान् ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ० कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् 1848 में) सामवेद (कौथुम शाखा) का जर्मन अनुवाद किया। अथर्ववेद (शौनक संहिता) का डब्ल्यू.एच. ... ने तथा अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द— महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन करना, शंका-समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न-बाधाओं का सहन करना, दिन-रात प्रचार यात्रा करना, छोटे-बड़े 43 ग्रन्थों को लिखना, अपने आपमें एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने उन पर ईंट-पत्थर फैंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगाई, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत्य किये किन्तु गुरुभक्त एवं प्रभुविश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं हुए और गुरु को दिया वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उव्वट और महीधर ने गोमेध, अश्वमेध, नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के 7 से 22वें मन्त्र तक पशु को बांधना, देवता के लिए उसका वध करना, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है। साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिये की गयी हिंसा, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गये। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर यज्ञों में हिंसा का घोर विरोध किया। उन्होंने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में 'पशून् पाहि' पशुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को 'अघ्न्या' अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गोमेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं, अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है, अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेदभाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्त्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

thearyasamaj.org

जीवनयात्रा के रथ

वेद-मन्त्र

प्रेष्ठं वो अतिथिꣳस्तुषे मित्रमिव प्रियम्।
अग्ने रथं न वेद्यम्॥

शब्दार्थ—प्रेष्ठम् (सर्वोत्तम प्रिय को-प्रभु को) अतिथिम् (जिसकी तिथि कोई निश्चित नहीं-उस प्रभु को) मित्रम् इव (स्वाभाविक प्रेम करने वाले मित्र के समान) प्रियम् (प्रेम करने वाले-प्रभु को) स्तुषे (गुणगान करता हूँ) अग्ने (उन्नति के मार्ग पर ले जाने वाले-हे प्रभो) रथम् न (रथ के समान) वेद्यम् (जानने योग्य हो)।

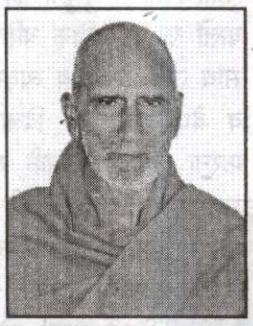

भावार्थ—वे प्रभु अत्यन्त प्रिय, जीव के मित्र, उसकी उन्नति के साधक तथा उस के लिये जीवन यात्रा में रथ के समान हैं।

व्याख्या—एक दिन एक युवक यात्रा के लिये जब घर से चलने लगा तो उसकी माता जी ने कहा, पुत्र! अकेले यात्रा नहीं करनी चाहिये। युवक यात्री ने मार्ग में विचार किया कि कोई साथी नहीं मिला। क्या करना चाहिये? तालाब के समीप एक कछुआ जाता हुआ दिखाई दिया। युवक ने उसे उठाकर चद्दर में बांधकर गन्धे पर रख लिया। प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि मनुष्य साथी नहीं मिला था तो किसी अन्य जीव का बोझ ढोना क्या आवश्यक था? इसका उत्तर अगली पंक्तियों में मिल जायेगा। वे दोपहर के समय एक बड़ के वृक्ष के नीचे सो गया। वृक्षमूल से सर्प निकला। सर्प उस युवक को काटने वाला ही था। चद्दर से निकलकर वह कछुआ भी बाहिर निकल चुका था। कछुआ उसकी (सर्प) पूछ पकड़कर उसे खाने लगा। शनैः-शनैः उसे मार डाला। युवक ने उठकर सर्प को मरा हुआ देख तथा कछुआ को पास में घूमते देख प्रभु का गुणगान किया। माताजी का कोटिशः धन्यवाद किया। जान बची लाखों पाये। कछुआ का कार्य पूरा समझकर उसे आदरपूर्वक समीप गहरे तालाब में छोड़ दिया। हितकारी मित्र के साथ यात्रा करनी चाहिए। दुष्ट मित्र तो मौत के ही कारण होते हैं।

चार यात्री एक साथ यात्रा कर रहे थे। रास्ते में एक थैली स्वर्ण की अशर्फियों की मिली। एक मित्र धन देकर भोजन लेने के लिये भेजा। तीनों ने विचार किया कि चौथे साथी को मार दिया जाये। धन तीनों को अधिक मात्रा में विभाजित होगा। भोजन लाने वाला सारे धन का स्वामी बनने के लिए भोजन में जहर मिला लाया। तीनों ने चौथे को पहुंचने पर मार डाला तथा तीनों विषयुक्त भोजन खाकर मर गये। संसार स्वार्थमय है। माता-पिता तक स्वार्थवश पुत्रहत्यारे हो जाते हैं। जीवनरूपी यात्रा का साथी बनाने योग्य केवल प्रभु ही हो सकता है। वही बेड़ा पार कर सकता है। उसी की गोद में बैठने से तथा उसी का सदैव स्मरण करते रहने से ऋतम्भरा बुद्धि के दर्शन होते हैं। दुर्योधन आदि ने सांसारिक साथी तथा धन-वैभव आदि को यात्रा का सहायक बनाया। मरते समय हाय-हाय करते हुये खाली हाथ ही गये। परन्तु जिन ऋषि-महर्षियों ने ईश्वर को ही अपनाया, सभी सांसारिक वस्तुओं को हेय समझा वही अमरत्व को प्राप्त हुये।

इन पंक्तियों को सदैव स्मरण करते रहें—

जिस आदमी का सिर झुके भगवान् के आगे।
सारी दुनिया झुकती है उस इंसान के आगे।
इन्सान यदि चाहे दुनिया को हिला देना।
उस ईश्वर के आगे शिर अपना झुका देना।
ईश्वर को गर रिझा पाये नहीं, आपत्तियां सर पर घूमेंगी।
सफलता हरदम कदम चूमेगी, विजय चौतरफा झूमेंगी॥

—आचार्य बलदेव

सूचना

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज के आशीर्वचन से तथा **पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** (रोजड़ वाले) की अध्यक्षता में गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) में दिनांक 13 अगस्त बुधवार से 17 अगस्त 2014 रविवार तक **पाँच दिवसीय आवासीय सरल आध्यात्मिक शिविर** का आयोजन स्त्री आर्यसमाज देव कालोनी रोहतक-09812792770 व वैदिक सरल आध्यात्मिक शिविर समिति रोहतक-09466008120 तथा आर्यावर्त टांसपोर्ट कंपनी रोहतक-09215676662 के द्वारा किया जा रहा है। पंजीकरण अनिवार्य है। पंजीकरण/शिविर शुल्क 800/- रु० प्रति शिविरार्थी है। समापन समारोह के मुख्य प्रवक्ता **आचार्य सनत् कुमार जी सांगोपांग** होंगे। लाभार्थी संपर्क करें। अन्य सम्पर्क सूत्र—

09355674547, 09416139382, 09728884949,
09466566064, 09896326718, 09255537679

रणवीर सिंह बल्हारा, प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

सम्पादक के नाम पत्र

26 जून 2014 आबु धाबी

समादरणीय श्रीयुत.... सादर नमस्ते। (U.A.E.)

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

अनेक आर्य सज्जनों के आमन्त्रण पर जून 19, 14 को यहाँ पहुँचा खाड़ी देशों की यह मेरी दूसरी यात्रा है। यहाँ मैं आर्य परिवारों को सांख्यदर्शन का अध्ययन, ध्यान, प्रवचन, शंका-समाधान करता हूँ। जब भी अवकाश मिलता है, आस-पास के देशों में भ्रमणार्थ जाता हूँ। दुबई देश में रहते हुये मैंने अबु धाबी, शारजाह अजमान फुजैराह, रस् अल् खैमाह आदि सात देशों की यात्रा की है। मुझे बहुत कुछ नया ज्ञान-विज्ञान, प्रत्यक्ष देखने, सुनने, पढ़ने को मिला, यह मेरी 19वीं विदेश प्रचार यात्रा है।

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक इन खाड़ी देशों में, खारे समुद्र, रेत के टीलों, गर्म धूलभरी हवाओं के कुछ भी नहीं था। अत्यन्त प्रतिकूल प्राकृतिक विपन्न जलवायु के ये कैसे जीते थे, यह कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेकिन आज वहीं पर अत्याधुनिक तथा विशाल, 50-80-100 मंजिलें आकर्षक भवनों को देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है, मन में विचार होता है कि कहीं स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं, कोई जादू तो नहीं है!!! वास्तविकता यह है कि यह सब; मन में किसी उद्देश्य को बनाकर उसको पूरा करने हेतु प्रबल भावना, दृढ़संकल्प, परम पुरुषार्थ तथा घोर तपस्या का परिणाम है।

मैंने सुना कि यहाँ के (शेख) राजा, जब अमेरिका, यूरोप आदि देशों की यात्रा करते हुए वहाँ की भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, सब प्रकार की उन्नति देखते थे तो उनके मन में यह विचार उत्पन्न होते थे कि क्या मेरे देश में ऐसे भवन, चौड़ी सड़कें, यातायात के साधन, होटल, रिसोर्ट, क्लब,. बाग, बगीचे, मनोरंजन के साधन, व्यापार मण्डी, सुख-सुविधाएं बनायी जा सकती हैं, जिनके कारण लोग आकर्षित होकर आवें, रहें?

बस एक दिन संकल्प कर लिया, योजनायें बनायीं गईं, अमेरिका, यूरोप, एशिया के देशों से सम्पर्क किया, मंत्रणा हुई, अनुबन्ध हुये, लोहा, सीमेंट, पत्थर, लकड़ी, इंजीनियर, श्रमिक, आदि जिन-जिन, साधनों की अपेक्षा थी, प्राप्त किये गये। कार्य प्रारंभ हो गया, शेख के मन में एक ही भावना कि कोई भी निर्माण हो, अद्भुत, अद्वितीय आकर्षक होना चाहिए। समुद्र में मीलों तक पत्थर, कंकर, रेत डालकर, पहाड़ बनाकर उन पर आकाश को छूने वाली, ऊँची, भव्य इमारतें बनायी गयीं और सुन्दर नगर बसाया गया। दूसरी तरफ भूमि में गहरी खाईयाँ खोदकर समुद्र के पानी को नहरों के रूप में फैला दिया गया। अन्य देशों से जहाजों में उपजाऊ मिट्टी मंगाकर, रेत के मैदानों में बिछाकर, बड़े-बड़े, उद्यान, खेत, बगीचे, उपवन, वाटिकाएं बना दीं। जहाँ घास का एक तिनका नहीं उगता था वहाँ पर रंग-बिरंगे, फूल-फल, घास के मैदान बना दिये। बसों, रेलों, ट्रामों, भण्डारों आदि की समुचित व्यवस्था करके सर्वत्र आवागमन को सरल बना दिया।

कृत्रिम रूप से बने सभी साधन-सुविधाओं से युक्त उत्तम व्यवस्था, कुशल प्रबन्ध, अनुशासन, दण्ड-व्यवस्था के कारण विश्व के 100 से भी अधिक देशों के नागरिक यहां अनेक प्रकार के व्यवसायों में लगे हुये हैं। अमीरात के देश विश्व का एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक एवं पर्यटन का केंद्र बन गया है। इन देशों के मुख्य नगरों में घूमते हैं तो यह भ्रम हो जाता है कि कहीं हम लंदन, पेरिस, टोक्यो, सिंगापुर में तो नहीं हैं?

इन देशों के वैभव, सम्पदा, विकास, उन्नति को देखकर, वही प्रश्न मन में उपस्थित होता है कि ये देश अत्यन्त प्रतिकूल वातावरण, जलवायु तथा विपन्नता के होते हुए, कुछ ही वर्षों में देश को स्वर्ग के समान सम्पन्न सुन्दर बना सकते हैं, तो हम क्यों नहीं? जहां पर हर प्रकार की प्राकृतिक सम्पदा, साधन अनुकूलता हो। जिस देश में शिल्प, कला शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, आचार, विचार, व्यवहार, सिद्धान्त तथा श्रेष्ठ गौरवमयी आदर्श परम्परायें हजारों-लाखों वर्षों से चली आ रही है, वह उन्नत क्यों नहीं हो रहा है? इन देशों के समक्ष हमारे इस आर्यावर्त की ऐसी दुर्दशा क्यों है? हमारे देश के अधिकांश लोग और उनका जीवन दयनीय, निकृष्ट, विपन्न, घृणित, तुच्छ, हेय क्यों है? हम चाहते ही नहीं हैं, चाहें तो हो सकता है।

विश्व का भ्रमण करने के पश्चात् मेरी समझ में यही आया है कि हमने उन्नति की सीमा व्यक्ति या परिवार तक बना ली है। हमारे नगर, राज्य, राष्ट्र का नाम विश्व में हो, हमसे लोग प्रेरणा लें, सीखें, अनुकरण करें, यहाँ आवें, हमारा सम्मान करें, ये विचार कभी भी मन में उठते नहीं हैं तो कार्य क्या होगा? हे देव हमारे देशवासियों की दयनीय दशा से उबर कर सम्पन्न बनने की प्रेरणा आप ही प्रदान करो। हम आपकी लुप्त हुई गरिमा को पुनः जीवित करके, विश्वगुरु बनकर "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**" के आपके वेद उद्घोष को साकार करें, यही प्रार्थना है स्वीकार करें—**ज्ञानेश्वरार्यः**

सरल आध्यात्मिक शिविर

दिनांक 22, 23, 24 अगस्त 2014, स्थान : आर्यसमाज रेलवे रोड, जीन्द जंक्शन, समय : प्रातः 7 से 9 बजे तक तथा सायं : 7.30 से 9.30 बजे तक।

संपर्क नंबर : 9416556358

thearyasamaj.org

माता-पिता की सम्मान के साथ सेवा करना सन्तान का कर्त्तव्य

❑ मनमोहन कुमार आर्य

गतांक से आगे....

अब हम परिवार के माता-पिता व दादा-दादी के विषय में विचार करते हैं। प्रायः बुजुर्ग शब्द इन्हीं के लिए प्रयोग में लाया जाता है। माता-पिता ने अपने युवावस्था में पुत्र व पुत्रियों को जन्म दिया व उनका पालन-पोषण किया। जन्म से पूर्व मां को लगभग हिन्दी के पूरे 10 महीनों तक बहुत सावधानियां रखनी पड़ती है। माता की एक छोटी सी असावधानी से बच्चे के जीवन को खतरा होता है। इस कारण इस अवधि में माता को कई प्रकार के शारीरिक व मानसिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। ऐसा भोजन लेना होता है जिससे गर्भ में बच्चे का विकास व निर्माण भलीभांति हो। बच्चे के जन्म के समय तो माता को असह्य प्रसव-पीड़ा होती है जिसका मुख्य कारण सन्तान का जन्म या वह सन्तान ही होती है। जन्म के समय माता की जान को खतरा भी होता है। कुछ माताओं की तो मृत्यु तक हो जाती है और इससे पिता का जीवन कष्टमय हो जाता है। जन्म के आरम्भ के कुछ वर्षो में माता को शिशु के पालन में अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। कई रात्रियां बिना सोये जागकर बितानी पड़ती है। शैशव काल व बाद के जीवन में सन्तान को कुछ रोगों होने पर माता-पिता उनकी चिकित्सा कराते हैं और इसमें धन व्यय के अतिरिक्त मानसिक व शारीरिक कष्ट उठाते हैं। माता-पिता ने सन्तानों को शिक्षित किया जिससे भावी जीवन में वह हर प्रकार से सुखी जीवन व्यतीत कर सके। बच्चे को स्कूल ले जाना, वापिस लाना, समय पर भोजन कराना, यह ऐसे कार्य हैं, जो पैसे लेकर कोई नौकर भी नहीं कर सकता। सन्तान के विवाह योग्य होने पर उनके विवाह आदि कराते हैं। सन्तानों को अपना घर बनवा कर उसमें रखते हैं व उन्हें दूर व पास के अच्छे-अच्छे स्थानों पर घुमाने ले जाते हैं। जहां वह स्वयं रहे, वहीं अपनी सन्तानों को भी रखते हैं, जो उनके प्यार व त्याग का प्रतीक है। बच्चे का जब जन्म होता है तो सुरक्षा की दृष्टि से प्राइवेट नर्सिंग होम या निजी हास्पीटलों आदि में प्रसव कराया जाता है। इन स्थानों का बिल भी हजारों रूपयों या कुछ प्रसवों में 1 लाख रूपये तक भी आ जाता है। माता पिता बच्चे को लेकर कोई रिक्स लेना नहीं चाहते। माता-पिता के मरने के बाद उनकी सारी सम्पत्ति सन्तानों को ही मिलती है। यदि माता-पिता की इन सब सेवाओं का आर्थिक मूल्यांकन करें व इन पर ब्याज आदि जोड़ें, तो हम समझते हैं कि कोई भी सन्तान माता-पिता द्वारा उन पर किए गये व्यय को लौटा नहीं सकती। यह तो भौतिक व आर्थिक स्थिति है। जिस भावना, प्रेम व स्नेह से व एक मन होकर उन्होंने पालन किया, उसकी तो गणना सम्भव ही नहीं है। प्रायः 60 वर्ष तक तो माता-पिता कार्य करते हीं हैं। अनेकों के पास जमा पूंजी भी होती है और कई निर्धन भी हो सकते हैं। अनेकों को पेंशन मिलती है। माता-पिता नहीं चाहते कि उन्हें अपनी सन्तानों से सेवा कराने की आवश्यकता पड़े, पर आयु बढ़ने के साथ स्वास्थ्य की समस्यायें बढ़ने लगती हैं। रोग आ घेरते हैं। पति-पत्नी में किसी एक की मृत्यु भी हो गई होती है। ऐसे अवसरों व समय में उन्हें अपेक्षा होती है कि उनकी सन्तानें अर्थात् पुत्र, पुत्र-वधु व पोते-पोतियां उनकी सेवा करें। उनको औषधियां मिले, चिकित्सकीय परामर्श मिलें, वस्त्र, सेवा, भोजन व आश्रय मिले तथा सभी से अच्छा व्यवहार मिले। माता-पिता इसके अधिकारी होते ही हैं। पहला कारण तो उन्होंने बच्चों को जन्म दिया, दूसरा पालन पोषण किया, शिक्षित किया, आश्रय दिया, अच्छे भोजन का प्रबन्ध किया व दिया व आवश्यकता पड़ने पर उनकी चिकित्सा कराई और उन्हें स्वास्थ्य हानि व मृत्यु आदि से बचाया, नाना प्रकार से उनके जीवन निर्वाह में सहयोग दिया और बदले में कभी कुछ नहीं चाहा व मांगा। ऐसे माता-पिता यदि आयु वृद्धि के कारण अशक्त, निराश्रय या परावलम्बी हो गये हैं तो सन्तानों का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह अपने बड़ों की सेवा-सुश्रुषा करें और उन्हें किसी प्रकार का शारीरिक व मानसिक कष्ट न होने दें। यदि वह अपने सुख-सुविधाओं के कारण माता-पिता व बड़े-बजुर्गों की उपेक्षा करते हैं, सेवा सुश्रुषा नहीं करते तो ऐसी सन्तानें सन्तानें सुपात्र न होकर, कृतघ्न, विश्वासघाती व अपराधी होती हैं। ऐसे लोगों के लिए दण्ड का प्राविधान होना चाहिये परन्तु हम अनुभव करते हैं कि इस विषय पर जो कानून व दण्ड व्यवस्था है, वह अपर्याप्त है। पहली मुख्य बात तो यह है कि सन्तानों को माता-पिता की हर सम्भव सेवा व सहायता करनी चाहिये, यदि फिर भी ऐसा नहीं होता तो ऐसे लोगों के लिए सरकार की ओर से वृद्ध-आश्रम old age home बनायें जाने चाहियें जहां निर्धन श्रेणी के लोगों को आश्रय देने के साथ, उनके भोजन व चिकित्सा का प्रबन्ध किया जाये तथा असहाय लोगों की नर्सिंग आदि व हर प्रकार से सहायता की जाये। समाज के लोगों को भी माता-पिता व बुजुर्गों की सेवा न करने वालों का सामाजिक बहिष्कार करने के साथ उन्हें राजकीय व्यवस्था से कानूनी व वैधानिक दण्ड दिलाने का प्रयास करना चाहिये। इसके साथ समाजिक संस्थाओं को इसके लिए सामाजिक आन्दोलन चलाना चाहिये जिससे वृद्धावस्था में किसी बुजुर्ग को कठिनाई या पीड़ा न हो।

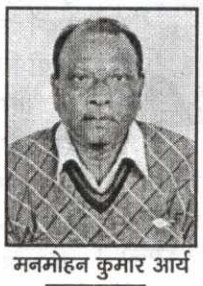

मनमोहन कुमार आर्य

बुजुर्गों की सेवा से सम्बन्धित हमने अपने मित्रों, परिचितों व उपदेशकों से कुछ घटनायें सुनी हैं जो उनके प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित हैं। एक घटना में किसी सम्पन्न पुत्र ने अपने पिता को ज्वालापुर हरिद्वार के आर्य वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रखा हुआ था। वह बीमार हो गये और आश्रम वासियों को लगा कि उनका अन्तिम समय निकट है। पुत्र को सूचना दी गई, मुम्बई से पुत्र आया, कुछ घंटे रूका और आश्रम के अधिकारियों से बोला कि उसके पास और अधिक समय नहीं है, उसे जाना होगा। उसने यह भी कहा कि आश्रमवासी पिताजी का इलाज करायें, उस पर जो व्यय होगा, वह दे देगा। यदि पिता की मृत्यु हो जाये तो उसे न बताया जाये क्योंकि वह आ नहीं सकेगा। एक अन्य घटना देहरादून की है। आर्य समाज व शिक्षा से जुड़े देश भर में प्रसिद्ध एक विद्वान की जो डा. सम्पूर्णानन्द, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश परिचित थे, उनके गुरू भी रहे, वृद्धावस्था में एक पैर की हड्डी टूट गई। उन्हें कुछ लोगों ने एक निर्सिंग होम में भर्ती करा दिया। नर्सिंग होम के निकट रह रहे आर्य समाज के एक सुहृद व्यक्ति ने उनकी सेवा की। आचार्य जी के कहने पर दिल्ली स्थित उनके पुत्र को फोन पर सूचना दी गई। पुत्र अपनी बड़ी कार में अकेला आया, पत्नी व पोते-पोतियां नहीं आईं। उसने प्रातः पड़ोसी आर्य महाशय के यहां स्नान आदि कर ब्रेकफास्ट आदि लिया और उनसे कहा कि उसे अब जाना है और चला गया। पिता वहीं अस्पताल में रह गये। इन बुजुर्ग आचार्यजी के तीन पुत्र थे, तीनों बाहर रहते थे। इन आचार्यजी ने देहरादून की अल्पायु की एक विधवा अशिक्षित महिला को अपनी पुत्री बनाकर पढ़ाया था। वह यहां के एक स्नात्कोत्तर महाविद्यालय में संस्कृत की विभागाध्यक्ष रहीं। वसीयत लिखते समय भी इनके साथ इन्हीं के निवास पर साथ में रहने वाली बहू पति के साथ नाराज होकर चली गयी क्योंकि आचार्यजी तीनों पुत्रों को सम्पत्ति देना चाहते थे। यह आचार्यजी युवावस्था में ही विधुर हो गये थे और पुनर्विवाह इस लिए नहीं किया कि तीन बेटे हैं, उन्हें विवाह की क्या आवश्यकता है? ऐसी घटनायें आम हो गईं हैं। देहरादून में ही घटी एक अन्य घटना स्थिति की विकरालता प्रदर्शित करती है। एक पुत्र ने अपनी पत्नी के सहयोग से अपने पिता की इस लिए हत्या कर दी कि पिता ने उसके नाम सम्पत्ति करने से मना कर दिया था। एक दूसरे प्रकरण में पिता ने पुत्र को शराब पीकर रात देर से घर आने पर समझाया या नाराज हुए। इससे खिन्न पुत्र ने पिता की हत्या कर दी। हरयाणा के एक मंत्री रहे व्यक्ति का उदाहरण जिसमें एक पुत्री ने पति के साथ मिलकर सम्पत्ति के लिए न केवल पिता की ही हत्या नहीं की अपितु कानूनी रूप से वारिस अपने भाई व उसके परिवार जिसमें पत्नी व छोटे-छोटे बच्चे भी शामिल थे, सभी की हत्या कर दी थी। इससे आज मध्यम वर्ग के युवाओं की मानसिकता का पता चलता है कि वह किस प्रकार की हो रही है। यह स्थिति बहुत ही दुखद एवं चिन्ताजनक है। हमने एक बार सुधांशु महाराज के प्रवचन में सुना था कि एक पिता अपने तीन-चार पुत्रों के व्यवहार से इतना दुखी हो गए कि सबक सिखाने के लिए उन्होंने सभी पुत्रों को परिवार सहित कुछ दिन घूमने के लिए अपने खर्चे पर किसी हिल स्टेशन पर भेज दिया और उनके जाने के बाद एक प्रापर्टी डीलर को बुला कर औने-पौने दामों में अपना बड़ा मकान बेच दिया जिसमें सभी साथ-साथ रहा करते थे। जब बच्चे हिल स्टेशन से लौटे तो चौकीदार ने उन्हें घर के बेचे जाने की सूचना दी और पिता द्वारा कुछ दिन के लिए बुक कराये गये एक होटल की बुकिंग व भुगतान की रसीदें आदि पकड़ा दी। उस पिता ने इसके बाद अपना शेष जीवन अपने पैसों से सुख पूर्वक बिताने का प्रयास किया और बच्चों को यथायोग्य सीख भी दी।

बुजुर्ग व्यक्ति यदि परिवार के साथ रहेगा तो जैनरेशन गैप जैसी समस्या के कारण उनमें सुख-शान्ति न रहने की सम्भवना रहती है। संसार की सबसे पुरानी संस्कृति व सभ्यता वैदिक सभ्यता

शेष पृष्ठ 5 पर....

thearyasamaj.org

बृहद् यज्ञ व वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

जहाँ पाश्चात्य संस्कृति शरीर के बाह्य आवरण तक परिचित है वहीं वैदिक संस्कृति शरीर के अन्दर अमर आत्मशक्ति की परिचायक है। वेद में इसका वर्णन भरा पड़ा है—**'अष्टा चक्रा नवद्वारा-तस्यां हिरण्यकोशः'** हो या **'पृथिव्यां अहमन्तरिक्ष-माहमारहम्'** मंत्र शरीर की अमर शाश्वत शक्ति को जानने का वर्णन कर रहे हैं। वानप्रस्थ अवस्था उसी उच्च स्थिति को प्राप्त करने की दीक्षा देते हैं।

ये विचार आचार्य वेदमित्र जी ने गांव भाली जिला रोहतक के श्री जयवीर जी द्वारा वालेंट्री सेवा निवृत्ति यज्ञ पर कहे। 30 जून को भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। भारतीय कभी इसी अध्यात्म के सरोवर में राजा हो या सामान्य पुरुष गोता लगाते थे और पचास वर्ष के बाद वे अपना नहीं समाज का हित करते थे। आचार्य जी ने आर्य अध्यापक जी के वैदिक संकल्प की प्रशंसा की।

इसी प्रकार दिनांक 12 जुलाई 2014 को वोरस जोहड़ बहु आर्यपुर रोहतक में बृहद् यज्ञ किया गया। आचार्य जी के सान्निध्य में अनेक युवा, स्त्री-पुरुष व बालकों ने आहुति प्रदान की। गांव में यज्ञ का बड़ा प्रसार है। समस्त ग्रामवासी इस यज्ञ में घी, सामग्री तथा अन्य सामग्री व सेवा कर्म करते हुए गौरवान्वित हो रहे थे।

आचार्य जी ने कहा वैदिक धर्मी राजा लोग ऋतु-ऋतु में ये यज्ञ करते थे। यज्ञों के कारण जहाँ वातावरण पवित्र होता था। रोगग्रस्त, रूखे समाज में इंटरनेट के दृश्यों में वह वात्सल्य, स्नेह, उमंग कहाँ। यज्ञ क उपरान्त सुन्दर देशी घी का प्रसाद की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम बहुत ही ज्ञानवर्धक रहा।

गोभक्त महासम्मेलन में पहुँचने पर धन्यवाद

हरियाणा गोशाला संघ एवं गोरक्षा दल हरियागा के तत्त्वावधान में 27 जुलाई 2014 को महान् गोभक्त हरफूल जाट जुलानी वाले के बलिदान दिवस पर गोभक्त महासम्मेलन में समस्त आर्यसमाज के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं गोभक्तों ने अपने कीमती समय में से इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से जो सहयोग किया है, उसके लिए हम आपके ऋणी हैं। आप लोगों के सहयोग के बिना इस सम्मेलन को सफल बनाना मुश्किल था और आपने हरियाणा गोशाला संघ और गोरक्षा दल हरियाणा के द्वारा मांग-पत्र और संघर्ष के ऐलान का भी समर्थन किया। उसके लिए हम आपका आभार प्रकट करते हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि भविष्य में जब-जब गोमाता के लिए उपरोक्त संगठन आह्वान करेंगे तब-तब आप लोग गोमाता के लिए तन-मन-धन से और अधिक जोर लगाकर बढ़-चढ़कर भाग लेंगे। अतः हम आपका इस सम्मेलन की सफलता के लिए आपके पधारने पर हरियाणा गोशाला संघ एवं गोरक्षा दल हरियाणा आपका हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

निवेदक

(आचार्य बलदेव)	(आचार्य विजयपाल)	(रामपाल आर्य)
संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक

(आचार्य योगेन्द्र)	(हरिओम् तायल)	(आचार्य सर्वमित्रार्य)
प्रधान	महामन्त्री	मन्त्री

हरियाणा गोशाला संघ एवं गोरक्षा दल हरियाणा, दयानन्दमठ रोहतक

आदित्य और आर्यन को सर्वश्रेष्ठ स्काउट पुरस्कार

पानीपत। राज्यपाल से सम्मानित हुए स्काउट्स एंड गाइड के आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के छात्रों का शनिवार को विद्यालय में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। गौरतलब है कि 22 जुलाई को राजभवन चंडीगढ़ में विद्यालय के स्काउट कब आर्यन 2 कक्षा व स्काउट आदित्य 10 कक्षा को श्रेष्ठ पुरस्कार हरियाणा के राज्यपाल ने प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्यालय स्काउट और गाइड द्वारा विद्यालय के खेल के मैदान में पौधारोपण किया गया। विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य व प्रिंसिपल रेखा शर्मा ने विद्यालय के स्काउट के भविष्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा व अपना आशीर्वाद दिया। रेखा शर्मा ने कहा कि भारत स्काउट गाइड एक श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इस अवसर पर विद्यालय के भारत स्काउट और गाइड डीपीई जगदीश चहल पीटीआई संदीप आर्य कबड्डी कोच, प्रदीप मलिक, प्रदीप, सुमित, अनमोल, आलोकित आदि उपस्थित रहें।

सृष्टि और आध्यात्मिक विज्ञान का.... पृष्ठ 4 का शेष....

है। यह सृष्टि के आरम्भ से ही अस्तित्व में आ गई थी। यह धर्म, संस्कृति व सभ्यता ईश्वर की देन होने के साथ इसका पल्लवन व परिवर्धन वेदानुसार ऋषि-मुनियों ने किया। उन्होंने मानव जीवन की समस्याओं को समझा था और उसके समाधान भी खोजे थे। उनका मत था कि ईश्वर का साक्षात्कार मनुष्य जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। जब तक यह प्राप्त नहीं होता मनुष्य जन्म-जन्मान्तर में योनि-परिवर्तनों से गुजरता हुआ सुख व दुख प्राप्त करता रहता है। ऋषियों ने चार आश्रम, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास बनाये थे। इन चारों आश्रम के लिए 25-25 वर्ष की अवधि निर्धारित की गई है। 25 वर्ष तक गृहस्थ जीवन व्यतीत कर, पुत्रियों के विवाह तथा पुत्र की सन्तान हो जाने पर वन में या घर से पृथक रहने का प्रावधान वानप्रस्थ आश्रम के रूप में किया था। यहां अन्य समान आयु के लोगों के साथ रहते हुए ईश्वर प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, तप, सेवा व योग साधना की जाती थी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हरिद्वार के निकट ज्वालापुर स्थान में आर्य समाज द्वारा स्थापित व संचालित एक पुराना "आर्य वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम" है जहां एक व दो कमरों के सैट बने हुए है। बुजुर्ग व आयुवृद्ध दम्पति यहां सुखपूर्वक रहते हैं। जो भोजन बना सकते हैं उन्हें छूट है अथवा अल्प मूल्य पर भोजन आदि की सुविधा उपलब्ध हैं। यहां की दिनचर्या भी जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक है। सभी बुजुर्ग यहां एक दूसरे का सुख-दुख बांटते हैं। इस आश्रम में रहने वाले बुजुर्ग अपने परिवारजनों के आदरणीय बन कर रहते हैं। यदि परिवार वाले न भी पूछें तो भी चिन्ता की बात नहीं हैं क्योंकि यहां बुजुर्गों का समय सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है। हमें लगता है कि ऐसी संस्थाओं का विस्तार होना चाहिये। सरकार को भी ऐसे आश्रम बनाकर चलाने चाहियें जिससे परिवार से दुखी व त्रस्त लोग ऐसे आश्रमों में आ कर रह सकें। वैदिक धर्म व संस्कृति में 75 वर्ष की अवस्था में संन्यास लेने का विधान है। संन्यास का अर्थ है कि परिवार से सभी प्रकार के सम्बन्ध हटा कर साधारण जनों में वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करना जिससे समाज में समरसता बनी रहे। ऐसा व्यक्ति सभी का पूजनीय होता है। वह जहां भी जाता है उसे भोजन, विश्राम व आश्रय प्रदान करने के साथ गृहस्थी जन उन्हें सभी प्रकार की सुविधायें प्रदान करते हैं। वह उन्हें उपदेश देता है और आशीर्वाद देकर मात्र कुछ घंटे या एक रात्रि ही किसी परिवार में ठहरता है। हमारे देश में प्राचीन व सनातन विधानों के अनुसार अतिथि यज्ञ ज्ञानी व विद्वान संन्यासियों को सेवा-सत्कार को ही कहा जाता था जो सभी गृहस्थ प्रसन्नापूर्वक करते थे। इससे बुजुर्गों को सम्मान व जीवन जीने की सभी सुविधायें समाज से प्राप्त हुआ करती थी।

हम आज की आधुनिक जीवन शैली में जीवन जीने वाले युवा पीढ़ी के लोगों से कहना चाहते हैं कि वह अपने माता-पिता को बोझ न समझ कर उनके स्नेह, वात्सल्य व उनके पालन पोषण में उठाये गये कष्टों का यदा-कदा चिन्तन कर लिया करें। पत्नी की वही बात स्वीकार करनी चाहिये जो उचित व न्यायपूर्ण हो। माता-पिता के मामलें में उनसे पृथकता की कोई भी बात नहीं माननी चाहिये। यदि किसी कारण परिस्थितियां अनुकुल न हो तो माता-पिता को समझाकर किसी अच्छे वृद्धाश्रम में भेज देना चाहिये और नियमित रूप से उनसे मिलते रहना चाहिये। माता पिता का सभी प्रकार का आर्थिक भार उन्हें स्वयं वहन करना चाहिये। ऐसा नहीं करेगें तो सामाजिक दृष्टि से अपमानित होगें और ईश्वर की न्याय व्यवस्था से भी दण्ड पायेगें। किसी शास्त्र का वचन है कि "अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुम्" अर्थात् किये हुए कर्मों के फल अवश्य ही भोगने पड़ेगें। इससे कोई बच नहीं सकता। जब भी कभी विपरीत परिस्थितियां आयें तो भगवान राम को याद कर उनके अनुसार अपना कर्तव्य निर्धारित करना चाहिये। वैदिक संस्कृति व जीवन शैली में पितृ-यज्ञ भी नित्य प्रति करने का विधान है जिसका अर्थ है कि घर के वृद्ध माता-पिता आदि सभी बुजुर्गों का सेवा-सत्कार सन्तानों व परिवार अन्य सदस्यों को पूरे मनोयोग से करनी चाहिये। ऐसा न करने पर वह भावी समय में ईश्वर के द्वारा दण्ड के भागी होते है। यह याद रखें कि आज के युवा कल के बुजुर्ग हैं, ऐसा समय उनके अपने जीवन में भी आ सकता है।

आवश्यक सूचना

आर्ष गुरुकुल कालवा जिला जीन्द में दिनांक 10 अगस्त 2014 को श्रावणी पर्व मनाया जायेगा जिसमें पूज्य आचार्य अखिलेश्वर जी मुख्यवक्ता होंगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि धर्मलाभ हेतु गुरुकुल कालवा जिला जीन्द अवश्य पहुंचें।

thearyasamaj.org

शोक-समाचार

आर्यसमाज हांसी शहर के प्रधान व जाट सभा के प्रधान तथा हरयाणा कृषि उद्योग जी.टी. रोड हांसी (हिसार) के मालिक चौ० देवदत्त खाण्डेवाला का 20 जुलाई 2014 को लम्बी बीमारी के कारण निधन हो गया। यह दु:खद समाचार सुनकर क्षेत्र में शोक छा गया। दाह-संस्कार पर सैकड़ों लोग सम्मिलित हुए। चौ० साहब मिलनसार, ईमानदार, कर्मयोगी, पुरुषार्थी, ईश्वर-विश्वासी, यज्ञ-प्रेमी, दानवीर थे। उनके नेतृत्व में आर्यसमाज हांसी ने वेदप्रचार व अन्य कार्यों में अच्छी तरक्की, उनकी अध्यक्षता में हांसी में शानदार जाट धर्मशाला का निर्माण करवाया। अपनी फैक्ट्री में खूब ऊँचाइयों को छुआ तथा क्षेत्र में पूरी छाप छोड़ी। वह अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, तीन योग्य सुपुत्र, दो पुत्री तथा साधन सम्पन्न भरा पूरा परिवार छोड़ गये। उनकी आयु 78 वर्ष की थी। शोक प्रकट करने वालों का हांसी में तांता लगा रहा। कैप्टन अभिमन्यु सहित कई राजनेता भी पहुंचे। दिनांक 29 जुलाई 2014 को जाट धर्मशाला में शोक-सभा हुई जिसमें उनको श्रद्धांजलि दी गई। हम वेदप्रचार मण्डल की ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति तथा शोकाकुल परिवार को उनके अधूरे कार्य को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करे।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, आर्य निवास, नलवा (हिसार)

श्री जगतराम आर्य भजनोपदेशक नहीं रहे

उपसभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री जगतराम आर्य भजनोपदेशक ग्राम अलाहर जिला यमुनानगर का आकस्मिक निधन 6 जुलाई 2014, 11 बजे रात्रि को 90 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनकी शोक-सभा दिनांक 20.7.2014 रविवार को आर्यसमाज-वेद भवन रेलवे रोड कुरुक्षेत्र में समाज के अध्यक्ष श्री विजय सभ्रवाल पत्रकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें उपसभा हरयाणा के पूर्व प्रधान श्री डॉ. आर.के. चौहान, डॉ. रामप्रकाश जी पूर्व सांसद, श्री डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, चमनलाल आर्य पानीपत, डॉ. ओमप्रकाश ललित, श्रीमती उमा सुधा चेयरमैन कुरुक्षेत्र, यशवीर शास्त्री, चौ० लाजपतराय करनाल, मा० कलीराम रामशरण माजरा, प्रिं० श्यामसुन्दर शर्मा अम्बाला, डॉ. एम.सी. शर्मा यमुनानगर, शान्तिप्रकाश, शमशेरसिंह शास्त्री करनाल, श्री बस्तीराम यज्ञ के ब्रह्मा व पूर्व उपसभा हरयाणा के वेदप्रचार अधिष्ठाता पं० जगदीशचन्द्र वसु पानीपत ने विशेष शान्तियज्ञ एवं मंच का संचालन किया। उपरोक्त सभी ने जगतराम जी को अपने-अपने श्रद्धासुमन समर्पित किये।

उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री राकेश आर्य, दिनेश आर्य, सुभाष आर्य व राजेश आर्य ने शोक-सभा की व्यवस्था की।

अन्त में सभा ने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति व शान्ति तथा व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की प्रार्थना की।

—दिनेश आर्य, कुरुक्षेत्र

माली की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक को सभा कार्यालय परिसर के पार्क के लिए एक पार्ट टाईम/फुल टाईम माली की आवश्यकता है। माली के कार्य को जानने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन योग्यता अनुसार। आवेदक 10 दिन के अन्दर अपना प्रार्थना-पत्र सभा को भेजें।

मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

संशोधन

'आर्य प्रतिनिधि' के 7 जुलाई 2014 अंक में पृ० 3 पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० श्री ओम्प्रकाश वर्मा की गम्भीर अस्वस्थता का समाचार दिया गया है परन्तु उनके सुपुत्र के चलदूरभाष की संख्या गलत छपी है। सही संख्या-09315822462 है।

—इन्द्रजित्देव 09466123677

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 2.8.2014 को आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक द्वारा गांव सांगा जिला भिवानी में श्री विक्रमसिंह पुत्र स्वर्गीय श्री सुखवीर सिंह आर्य के निवास-स्थान पर यज्ञ-सत्संग-वेदप्रचार तथा गोरक्षा का कार्यक्रम हुआ जिसमें यज्ञ दयानन्द शास्त्री (टिटौली) के ब्रह्मत्व में हुआ जिन्होंने अपने प्रवचन में ईश्वर, प्रकृति, जीव के ठीक स्वरूप की व्याख्या बड़े सरल सहज शब्दों में की तथा झूठे गुरु-देवता तथा आडम्बर अंधकार से दूर रहने की प्रेरणा बड़े ही प्रभावशाली शैली में दी तथा बहन दयावती आर्या, प्राचार्या देवानन्द (हालैण्ड), महावीर शास्त्री तथा होनहार सुशील कुमार आर्य ने भजनों द्वारा लोगों को बहुत ही प्रभावित किया जिसमें सभी कह उठे कि यह कार्यक्रम हमारे गांव में फिर किया जाये। हम इसका प्रबन्ध जल्दी ही करेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल मधुर ने वेद तथा गोरक्षा के बारे में बहुत ही मार्मिक तरीके से प्रस्तुती की। आर्यसमाज रोहतक से करतार सिंह आर्य ने अन्त में सभी गांववालों का धन्यवाद किया जिसमें रोहतक के रणवीर मान, राजसिंह, कंवरसिंह, शान्तिदेवी, स्नेहलता समाज के सचिव सुभाष सांगवान शामिल हुए। उस कार्यक्रम के प्रायोजन में श्री ज्ञानसिंह सुडाना तथा सुखवीर सिंह दहिया का सराहनीय सहयोग तथा प्रयास रहा तथा एक सफल कार्यक्रम हुआ जिससे ईश्वर की कृपा हुई और वहां पर सूखे की स्थिति को अपनी वर्षारूपी कृपा से जल-जल कर दिया।

—सुखवीर सिंह दहिया, आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक

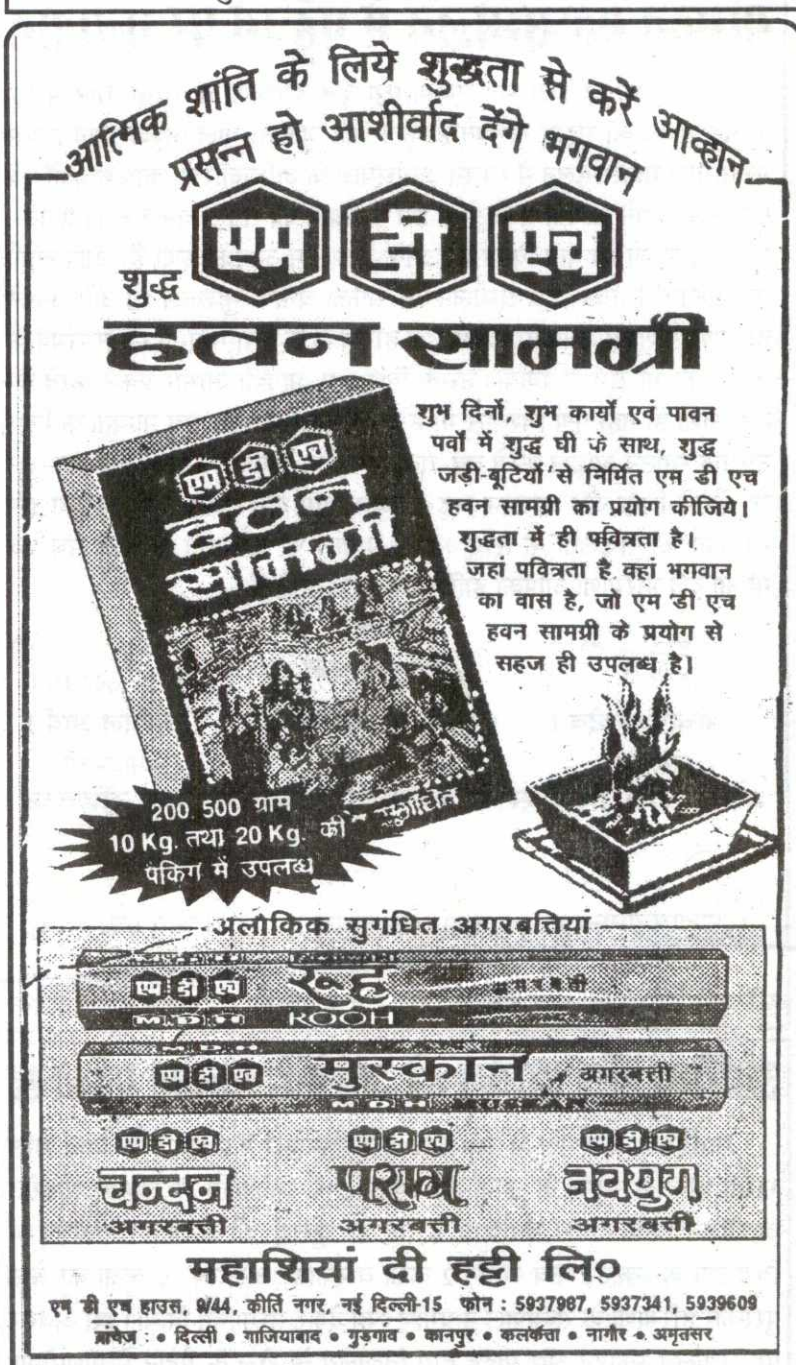

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

thearyasamaj.org

आचार्य सत्यवीर 'प्रेरक' द्वारा लगाए गए शिविरों का विवरण

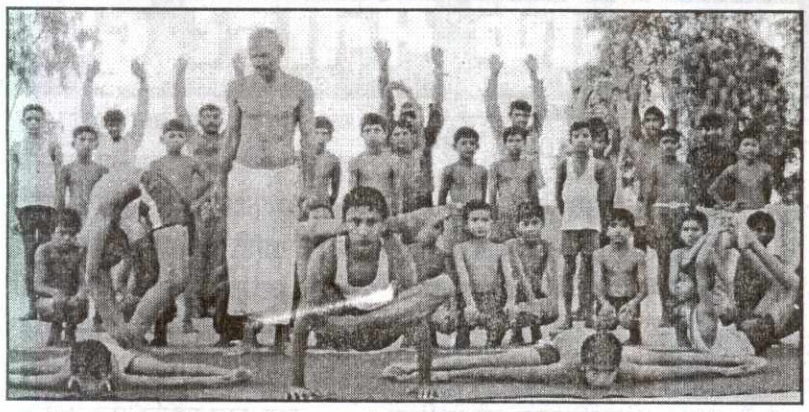

दिनांक 23 से 24 मई 2014 को गुरुकुल घासेड़ा (रेवाड़ी), 25 मई से 31 मई 2014 तक बहरोड़ो (अलवर) राजस्थान, 1 जून से 7 जून 2014 तक कनेहटी (भिवानी), 10 से 14 जून 2014 भापड़ौदा (झज्जर) और डी.एस.एम. स्कूल असावरी (भिवानी), बालनाथ योगाश्रम बलाली (भिवानी), पिचोपा कलां (भिवानी), दुल्हेड़ी (तोशाम), उमरा (हिसार), डालूवाला (हरिद्वार) आदि विभिन्न स्थानों में वेदप्रचार योग एवं ईश्वर भक्ति की प्रेरणा यज्ञ तथा स्वास्थ्य शिक्षा आदि का ज्ञान कराया तथा विधिवत् रूप से अभ्यास भी करवाया। इन अभ्यासों में आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, कराटे व सूक्ष्म व्यायाम आदि मुख्य रहे। वैसे लाठी-भाला-डम्बल-लेजियम और तलवार भी कुछ शिविरों में सिखाए गए। सभी शिविरों से उत्तम स्वास्थ्य, धर्म में रुचि, अन्धविश्वास से मुक्ति, नशा व मांस-अण्डे आदि अभक्ष्य पदार्थों से दूर रहने का संकल्प आदि दिलवाया गया। एक-दो दिवसीय कार्यक्रमों में टिटौली-निन्दाना एवं अजायब (रोहतक) भी सम्मिलित रहे। सभी शिविरों में लोगों से बड़ा स्नेह व उत्साह मिला मैं सबका आभार प्रकट करता हूँ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित वेदप्रचार का शुभारम्भ कार्यक्रम खरखौदा (सोनीपत) में भाग लेने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

—आचार्य सत्यवीर 'प्रेरक'

मूर्तिपूजा और तीर्थयात्राओं का.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

फँसे हैं, जो जानते हैं वे भी वोट की खातिर अपना मुंह बन्द रखते हैं। कितना भ्रमजाल पाखण्डी फैला रहे हैं? बुद्धि है तो उससे काम लो।

हिन्दू, मुझे तो ये ही मालूम नहीं कि हिन्दू शब्द कहाँ से आया, इस देश में तो आर्य बसते थे। आर्यावर्त इस देश का नाम था, हिन्दू, हिन्दुस्तान कैसे बना? मुझे इसकी जानकारी नहीं है। लेखकों के इस सम्बन्ध में लेख भिन्न-भिन्न प्रकार की परिभाषाओं के पढ़ने को मिलते हैं, परन्तु वास्तविकता क्या है, यह मालूम नहीं।

हिन्दू धर्म, सिख धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म आदि इतने धर्म कैसे बन गये? धर्म तो मानव जाति का एक ही होता है और वह है सत्य आचरण, फिर उक्त धर्मों में इसके अतिरिक्त मान्यताएँ हैं क्या? धर्म तो वह जो धारण करने योग्य, सबका जिससे परोपकार होता है। जो वस्तु जैसी है उसको वैसा ही मानना, जानना, जनाना चाहिए। चूने के पानी को दूध समझकर उसे मथने से मक्खन नहीं निकल सकता। आपको यह विश्वास है कि मूर्तियाँ आपके दुःखों का निवारण कर देगी, आपके पाप क्षमा कर देगी, क्या इनमें कुछ करने की शक्ति है। शत्रुओं से अपनी रक्षा तो कर नहीं पाती, आपकी रक्षा अवश्य करेगी। ईश्वर तो किसी के पाप क्षमा नहीं करता।

मूर्ति खा नहीं सकती, उन्हें खिला रहे हैं। भारतवर्ष में बीसों करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्हें दो वक्त का पेटभर खाना भी नहीं मिल पाता, जिनके पास तन ढकने को कपड़े नहीं, रहने का, शिक्षा का, चिकित्सा का प्रबन्ध नहीं है और लोग असंख्य धन मूर्तियों पर चढ़ा रहे हैं, जिससे पण्डे-पुजारी पल रहे हैं और बहुत से कुकृत्यों को भी धर्म की आड़ में बड़े धड़ल्ले से कर रहे हैं, क्योंकि मूर्तिपूजक अपनी बुद्धि घर छोड़ आते हैं, पुजारी की बुद्धि से सब काम करते हैं, तो विनाश तो निश्चित है।

परमात्मा का स्वरूप क्या है?

एषु सर्वेषु भूतेषु गठोऽऽत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते तु अग्रय्या बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मर्शिभिः॥ कठोपनिषद्

अर्थ-वह परमात्मा सब प्राणियों-अप्राणियों में छुपा हुआ है। वह सामने नहीं है। सूक्ष्म दृष्टि वाले लोग अपनी तीव्र और सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उसे जान लेते हैं। ईश्वर को जानना है तो अपनी बुद्धि का प्रयोग करो, मूर्तिपूजा को तुरन्त प्रभाव से छोड़ दो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

प्रवेश प्रारम्भ

विद्यालय में दो प्रकार के पाठ्यक्रम हैं।

प्रथम पाठ्यक्रम महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवीं कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम हैं।

द्वितीय पाठ्यक्रम में उपदेशक कक्षाएं चलती हैं जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकाण्ड विशेष रूप से सिखाकर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक आर्यसमाजों अथवा आर्य-संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्यसमाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो ज्यादा उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए आचार्य जी से पत्र व्यवहार द्वारा जानकारी प्राप्त करें।

सम्पर्क : आचार्य रामदेव शास्त्री, पो. ता. टंकारा, जिला राजकोट (गुजरात) 363650

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ायें अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहाँ इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं, जहाँ इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता का मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवावर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दानस्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से अनृण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खान-पान का व्यय 11,000/ रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) शिवराजवती आर्या (उपप्रधाना) रामनाथ सहगल (मन्त्री)

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्यसमाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषिभक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषिभक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषिभक्त यहाँ कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषिभक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाये जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाये जायें। प्रत्येक इच्छुक ऋषिभक्त प्रतिवर्ष 1000/- रुपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्म स्थान से जुड़ सकते हैं। 10,000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) शिवराजवती आर्या (उपप्रधाना) रामनाथ सहगल (मन्त्री)

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 7206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

अमृत उषःकाल और प्राकृतिक मनोहर दृश्य

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, म०नं० 1180, सै०-10-ए, गुड़गांव

वेद में उष:काल की महिमा का बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है। चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्र आदि प्रभु की दिव्य विभूतियां रातभर पृथिवी तल पर अमृत बरसाती रहती हैं तथा प्रात:काल सूर्य में से उषा नाम की एक किरण निकलती है जो सृष्टि में अमृत का संचार करती है। इसलिए प्रभात समय को अमृतवेला तथा उष:काल कहा गया है। प्रात:काल इन्हीं दैवी शक्तियों के अमृत को लेकर वायु मंद-मंद गति से चलती है। इस अमृतमयी वायु के त्वचा से लगने पर शरीर में तेज, बल, आरोग्यता, स्फूर्ति, उत्साह का संचार होता है। प्रात:काल की शुद्ध वायु रोगों की अचूक तथा अमोघ औषध है। अस्वस्थ से अस्वस्थ व्यक्ति का भी इस वेला में रोग का प्रकोप कम हो जाता है। मन में कुछ उत्साह बढ़ जाता है।

उष: श्रवण, मनन और स्मरण के लिए सर्वोत्तम समय है। उषा शोभन सुन्दर जन्मवाली है। उष: काल का समय प्रकृति में शोभा और सौन्दर्य भर देता है। जिस ओर दृष्टि डालिए इस समय का मनोहर दृश्य नयनाभिराम होता है। बहते हुए नदी के प्रवाह में उसकी शोभा कुछ और ही प्रकार की होती है। वनस्थली की दुर्वा पर झिलमिलाते ओस-कण अपना अनोखा सौन्दर्य बिखेर रहे होते हैं। इस समय में न केवल ओसकण दूब पर मोती से झिलमिलाते हैं, अपितु रात को वृक्षों और वनस्पतियों पर पड़ी हुई ओस बून्द-बून्द करके टपकने लगती है। उधर फूल भी खिलने लगते हैं। वृक्षों की टहनियों और पत्तियों से बना मुकुट भी मन को मोह लेता है। पेड़, पौधे, लताएं आदि की हरियाली दर्शनीय होती है। पेड़ों के वर्षा से धुले हरे-हरे पत्तों तथा उनमें लिपटी हुई लताओं को देखकर सहृदयों के मन मुग्ध हो जाते हैं।

इस समय नाना प्रकार के पक्षी मस्त होकर गाते हैं। कुक्कुट की उदात्त, अनुदात्त और प्लुत से युक्त तीव्र ध्वनि, कोयल की अमृतवर्षिणी स्वरलहरी, केवल ब्राह्ममुहूर्त में ही बोलने वाली एक विशेष चिड़िया की कानों को मीठी लगने वाली ध्वनि, पौ फटने पर एक साथ चहचहाने वाले पक्षियों का कलरव और न जाने कितने प्रकार की ध्वनियां सारे वायुमण्डल को सङ्गीतमय बना देती हैं। अत: वेद में उष:काल का इन विशेषणों से इस समय की भिन्न-भिन्न प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया। प्रात:काल का समय शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों के विकास के लिए अत्यन्त गुणकारी है और आत्मा के लिए आनन्द प्रदान करने वाला है। प्रभातकाल में शान्ति का साम्राज्य होता है।

प्राकृतिक मनोहर दृश्य

प्रभु के संकेतमात्र से नृत्य करते हुए चाँद, सूरज तथा तारों से जगमगाता हुआ आकाश, पक्षियों की तरह उड़ते हुए ये अरबों-खरबों ग्रह और उपग्रह, ये विशाल सागर और नदियों से उछलते हुए जल की ऊँची-ऊँची लहरें, ये हिम से ढके हुए पर्वतों के शिखर, ये रिमझिम वर्षा करते हुए बादल, ये झरने, रंग-बिरंगे फूल, भिन्न-भिन्न प्रकार की ऋतुएं, संवत्सर-वर्ष, दिन-रात, सप्त द्वीप, सप्त समुद्र, सप्त लोक और सप्त पाताल आदि की व्यवस्था इस विशाल सृष्टि में उस सत्यस्वरूप प्रभु की सुन्दर कृति है।

वर्षा रुकने पर तो पर्वतीय दृश्य बड़े ही सुहावने लगते हैं। उन पर लहराते हुए पेड़ तथा पेड़ों पर कलरव करते हुए पक्षीवृन्द, झरने तथा वर्ण-जल से धुले हुए पत्थर अपनी निराली शोभा से दर्शकों के आकर्षण-केन्द्र बन जाते हैं। वर्षा ऋतु के इन सुहावने दृश्यों को देखकर तथा आकाश में छाये हुए बादलों को देखकर मयूर नृत्य करने लगते हैं, पपीहे पी-हू-पी-हू करके अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हैं। बाग-बगीचे हरे-भरे रहते हैं तथा कई प्राकृतिक वन समृद्ध हो जाते हैं।

जब-जब प्रकृति सुन्दरी ने सोलह सिंगार सजाकर रूप निखारा, रंग-बिरंगे फूलों की चुनर ओढ़ी, खेत-खलिहानों की हरीतिमा से अपना आवरण रंगा या चाँद-तारों की बिंदिया सजाई, माँग में बाल अरुण की लालिमा भरी, इन्द्रधनुष की भौंहें तान काली घटा का अंजन आँजा तो बदलते मौसम में प्रकृति का रंग-बिरंगा सौन्दर्य बहुत ही आकर्षक और प्रभावपूर्ण दृश्य देखकर सृष्टि में हर्ष की लहर दौड़ पड़ी। प्रकृति का बदलता सौन्दर्य मानव-मन में उमड़ती उमंग और उल्लास के रूप में प्रकट होकर पर्व या त्यौहार कहलाया। प्रकृति में एक अनूठा सौन्दर्य होता है। प्रकृति से हमें ज्ञान के छोटे-छोटे दीपक मिले हैं, पर उन्हें हम अपने दुराचारों, दोषों और भूलों से बुझा देते हैं।

वेद का पहला आदेश है कि मैं चक्षु की दर्शन-शक्ति से प्रभु के अद्भुत रचना कौशल को देखकर उसका विश्वासी बनूँ। सुन्दर युवा और युवतियों को देखकर हमें उसकी कारीगरी का सिक्का मानना चाहिए कि उसने इतने घटिया सामान से भरे पुतले में भी सौन्दर्य का निखार और चमत्कार उत्पन्न कर दिया है। प्रकृति जीवों में उल्लास का विकास करती है तथा एकरस जीवन में रस घोल देती है। प्रकृति मनुष्य की बुद्धि का इंजन है।

कर ले नेक कमाई मानव चोला है...

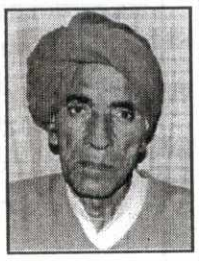

करले नेक कमाई, मानव चोला है॥

कर्मक्षेत्र है चोला पाया, फिर भी न इससे लाभ उठाया।
सोच-समझ ले भाई, मानव चोला है॥
जैसा कर्म कमायेंगे हम, वैसा ही फल पायेंगे हम।
इसमें झूठ न राई, मानव चोला है॥
समय है अब शुभ कर्म कमा ले, मानव जीवन सफल बना ले।
आयु बीतत जाई, मानव चोला है॥
सत्य धर्म से रिश्ता जोड़े, पाखण्ड दुष्कर्मों को छोड़े।
छोड़े सब बुराई, मानव चोला है॥
सत्पुरुषों की संगत करिये, वेद-शास्त्रों को नित्य पढ़िये।
यह मार्ग सुखदाई, मानव चोला है॥
दीन-दुखियों की सेवा करिये, प्राणिमात्र के दु:ख हरिये।
दूर करें कठिनाई, मानव चोला है॥
मानवता के गुण हम धारें, बिगड़े सबके काम संवारें।
सोचें सबकी भलाई, मानव चोला है॥
अविद्या में संसार है आया, धर्म विरुद्ध मार्ग अपनाया।
बुद्धि है भरमाई, मानव चोला है॥
जड़-पूजा अज्ञान है भारी, साचें समझे सब नर-नारी।
छोड़े मूर्खताई, मानव चोला है॥
वेद ज्ञान जग में फैलावे, पाखण्ड मत सब दूर भगावे।
क्यों है सुस्ती छाई, मानव चोला है॥
'**सेवक**' यज्ञकर्मों का कर ले, पुण्यकर्मों से जीवन भर ले।
कर ले सत्य कमाई, मानव चोला है॥

काम, क्रोध और मोह की, जब तक मन में खान।
प्रभु प्रीतम कैसे मिलें, मन में कपट अभिमान॥

भेंटकर्त्ता :- सूबेदार करतारसिंह आर्य 'सेवक' आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

शुभ-विवाह

आर्यसमाज बुआना लाखू जिला पानीपत के प्रधान डॉ० देवीसिंह आर्य के सुयोग्य सुपुत्र श्री अजयसिंह मलिक का शुभ-विवाह-संस्कार दिनांक 21 जून 2014 को कुमारी प्रियंका के साथ पूर्णतया वैदिक-रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह में किसी प्रकार के दहेज का लेन-देन नहीं हुआ तथा सभी रस्म-क्रियायें एक रुपये से पूरी की गई।

अजय सिंह आर्य

कुमारी प्रियंका

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा नवदम्पति को शुभ आशीर्वाद देती है तथा परमात्मा से उनके सुखमय दाम्पत्य एवं संस्कारित जीवन की कामना करती है।

—सत्यवान आर्य, सभा कार्यालय, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।